फोन : (079) 26579301
फेक्स : (079) 26579220
E-mail : vskguj@gmail.com
Sankalanvsk@gmail.com
Website : www.vskgujarat.com

विश्व संवाद केन्द्र - गुजरात
२, मयुर चेम्बर्स, गांधीग्राम रेल्वे स्टेशन के सामने,
अहमदाबाद - ३८०००९.

09.09.2012

प. पू. सरसंघचालक मा. मोहनजी भागवत का उद्‌बोद्यन

वडोदरा (गुजरात) दिनांक : 08.09.2012

बौद्धिक वर्ग व सभा में अन्तर है. सभा में श्रोता को सुनने का बंधन नही होता, मन में आया तब तक सुना. बौद्धिक वर्ग में ऐसा नही है बौद्धिक वर्ग में आकर पूरा समय पंक्तिबद्ध होकर बैठते हैं-सुनते है केवल सुनते नही है वरन् उसमे बतायें गये विषय को आचरण मे उतारना व्यवहार में लाने का प्रयत्न करते है. संघ का एक ही विषय है राष्ट्र को परम् वैभव तक ले जाना. आज भारत का व्यक्ति कितना सुरक्षित है, जितना भारत सुरक्षित है... मैं ठीक रहूं, मेरा परिवार ठीक रहे, पढलिख लिए तो नौकरी नही है. क्यो नही है? उसके लिए मैं तो जिम्मेदार नहीं हूं, परन्तु देश की स्थिति ऐसी है. अपने निजी जीवन का विचार करते है तो भी देश का विचार करना पडता है. मनुष्य को सुखी करने के लिए पिछले साठ-सत्तर, सौ वर्ष में जितने प्रयत्न हुए वे विफल हो गये. विज्ञान के आधार पर बडी प्रगति हुई किन्तु प्रगति के साधन शक्तिशाली लोगो के हाथ में केन्द्रीत हो गये.

एक भारतवर्ष है जिसने प्राचीन काल में समस्त मानवजाति को सुख-शांति प्रदान किया था. सारा विश्व भारत की ओर एकटकी लगाकर देख रहा है. परन्तु भारत की वर्तमान स्थिति कैसी है- Now Govt. Punished citizen who fighting foreign intruders. आर्थिक सलाहकार प्रशासन पंगु हो गया है. समाज को देखगे तो समाज में कितने भेद है. अपने स्वार्थ के लिए जाति प्रांत के भेदो को उभारकर स्वार्थ सिद्ध करना, पानी को लेकर झगडा, नदियों को लेकर झगडा. आज नैरास्य की स्थिति है उस परिस्थिति में हमारा कर्तव्य क्या है ? परिस्थिति को लेकर काफी चर्चा होती है. अनेक प्रकार की समस्यायें है- सुरक्षा, सामाजिक समरसता, बेरोजगारी. अपने देश में पिछले 150-200 वर्षो में अनेक महापुरुष हुए. रा.स्व.संघ के स्थापक पू. डॉ. हेडगेवारजी ने कहां जब तक देश सुखी नही बनता तब तक अपने सुख का विचार नही करना. उनके समकालीन जितने भी नेता थे. लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी, वीर सावरकर आदि सभी के यही विचार थे. देश में कुछ मूलभूत कमींया घुस गयी है. सामान्य समाज की गुणवत्ता और एकता के आधार पर सब समस्याओं का समाधान है.

अनेक वर्षो के अनुभव के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुचे है कि प्रत्येक राष्ट्र का एक प्रयोजन होता है. हमारा देश कभी मिट नही सकता. भुतकाल में अनेक देश समाप्त हो गए है, हमारा देश हजारो वर्षो से आक्रमण सहन करते हुए भी खडा है. क्या है हमारे देश की पहिचान ? भारत की भारतीयता हिन्दु है. सर्वोच्च न्यायलय ने भी यही कहां है. मन के सारे स्वार्थ मिटाकर, भेद मिटाकर सारे समाज को आत्मीयता के आधार पर संगठित करना है. हमारी जो दुर्बलता है उसको दूर कर, समाप्त कर संगठित करना है.

रा.स्व.संघ मे उसका उपाय है रोज की शाखा. यह जो सीधे सादे सरल दिखने वाले कार्यक्रम किये जाते है उससे उत्कृष्ट व्यक्ति निर्माण होता है. इसके लिए शाखा में जाना होता है तथा संस्कार न बदले इसके लिए नित्य जाना होता है. नित्य साधना से मनुष्य डिगता नही, भटकता नही, सार्मथ्यवान बनता है. सौभाग्य से हमारे पास साधन है- शाखा है. समाज का धैर्य और विश्वास कैसे बना रहे यह चिन्ता हमे करनी है. हमे सेवा के लिए तत्पर रहना है. समाज में इस प्रकार का वातावरण बनाना है कि हर गांव में, हर बस्ती मे शाखा होनी चाहिए. हम अपने घर को अच्छा हिन्दु घर बनायें. संस्कार से संस्कृति बचती है. आज शिक्षा जहां से संस्कार मिलने चाहीए वहां मिल नही रहे. राजनीति, क्रिकेट, सिनेमा को छोडकर शेष समाज के विषय पर चर्चा करना, चिन्तन करना चाहिए. स्वयं की साधना को तीव्र रखे, नित्य रखे अपनी इस मूल्यवान संस्कृति का व्यवहार अपने परिवार में, समाज में करे यही अपेक्षा है.